धनियाँ

(प्रमुख कीट एवं रोगो की रोकथाम)

डा. राकेश कुमार, डा. रेखा कुमावत[1] एवं डॉ. बी एल नागा

ए. टी. सी. मलिकपुर, भरतपुर, राजस्थान

[1]कृषि विश्वविद्यालय - कृषि अनुसंधान केंद्र, मंडोर (जोधपुर), राजस्थान

*संबंधित लेखक: rakeshcsa8328@gmail.com

e-ISSN No. 2583-0937

बीजीय मसाले वाली फसलों में धनियॉं एक महत्वपूर्ण फसल है। इसकी पत्तियों और दानों का खाने में खूब इस्तेमाल किया जाता है। इसकी हरी शाखाओं एवं पत्तियों का उपयोग व्यंजनों को सुगन्धित करने वाले पदार्थ के रूप में काम लिया जाता है। इसकी पत्तियांॅ शर्करा, प्रोटीन व विटामिन ए से भरपूर होती है। इसकी पत्तियों एवं दानों में कई औषधीय गुण होने के कारण यह अपच एवं अन्य उदर रोगों के उपचार में कारगर हैं। इसके तेल का उपयोग चॉकलेट, मिठाइयों एवं शराब को सुगन्धित करने भी किया जाता है। राजस्थान राज्य बीजीय मसालों के उत्पादन में मुख्य अग्रणी राज्य हैं, जिसका धनिये उत्पादन में भारत में कुल धनिया उत्पादन में 40 प्रतिषत योगदान है।

प्रमुख कीट एवं रोग

उत्पादन के दोरान इस फसल बुआई से लेकर पकाई तक कई प्रकार के कीट एवं रोगों का प्रकोप होता रहता है। इनके कारण किसान को न केवल इसका कम उत्पादन प्राप्त होता हैं अपितु इसकी उचित गुणवता भी नही मिल पाती है। इस फसल में लगने वाले प्रमुख कीट और रोग जो फसल के उत्पादन पर विपरीत प्रभाव छोड़ते है इस प्रकार है-

प्रमुख कीट एवं रोकथाम

1. मोयला (एफिड़)

धनिये में फूल बनते समय या उसके बाद मोयला का प्रकोप होता है। ये पौधों के कोमल भागों का रस चूसते हैं जिससे उपज में भारी कमी आ जाती है। यह कीट हरें रंग का होता है, जिसके शिशु और वयस्क दोनो ही पौधे के तनों, फूलों व बीजों जैसे कोमल अंगो का रस चूसते हैं, जिससे पौधा कमजोर हो जाता है और उपज में भारी कमी होती है।

रोकथाम

एफिड कीट की रोकथाम हेतु परभक्षी मित्र कीट लेडी बर्ड बीटल का संरक्षण करे अथवा फसल पर बवेरिया बेसियाना 250 ग्राम प्रति एकड़ का उपयोग करे प् एफिड कीट की रोकथाम हेतु रासायनिक कीटनाशी थायोमेथोक्सोम 25 डब्लू जी 100 ग्राम या इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एस एल 80 मिली प्रति एकड़ 200 लीटर पानी के साथ छिड़काव करें करने से एफीड को नियंत्रण में लाया जा सकता है.

e-ISSN No. 2583-0937

2. कट वर्म एवं वायर वर्म

इस कीट का प्रौढ़ काले भूरे रंग का चित्तीदार पतंगा होता है. इस पतंगा के आगे वाले पंख हल्के भूरे या काले भूरे और कीनारों पर काले चिन्ह होते हैं तथा पिछले पंख सफेद होते हैं। फसल की शुरुआती अवस्था में इस कीट का प्रकोप अधिक होता है। इस कीट की लट्ट (सूंडी) भूरे रंग की होती है। शाम के समय यह सूण्डी बहार निकलकर पौधों को जमीन की सतह के पास से काटकर गिरा देती है। जिससे फसल को अधिक नुकसान पहुँचता है।

रोकथाम

इस कीट की रोकथाम के लिए खेत और आसपास की जगह पर खरपतवार नही उगने दें।. जैविक-नियंत्रण में एक किलो *मेटारीजियम एनीसोपली* को 50-60 किलो गोबर या कम्पोस्ट की खाद में मिलाकर बुवाई से पहले खेत में मिला दें।

2. बरूथी (माईट्स):

इस कीट का आक्रमण फसल में दाना बनते समय होता है तथा इसके अधिक आक्रमण से पूरा पौधा हल्का पीला रंग का हो जाता है। इस कीट का प्रकोप नई पत्तियों व पुष्पक्रम पर होता है। जिसके कारण पौधा छोटा रह जाता है। यह छोटा कीट पत्तियों की निचली सतह पर दिखाई देता है।

रोकथाम

थायोमेथोक्सोम 25 डब्लू जी 100 ग्राम या इमिडाक्लोप्रिड 17.8% एस एल 80 मिली प्रति एकड़ 200 लीटर पानी के साथ छिड़काव करें

प्रमुख रोग एवं रोकथाम

1. म्लानि (विल्ट):

यह रोग *फ्यूजेरियम आक्सिस्पोरम* नामक कवक से उत्पन्न होता है। इस रोग का आक्रमण पौधों की किसी भी अवस्था में हो सकता है, लेकिन पौधों की छोटी अवस्था में यह ज्यादा होता है। इस रोग के कारण पौधों की जडों का रंग अंदर से भूरा हो जाता है। रोगी पौधे मुरझाने लगते है तथा ऐसा प्रतीत होता है जैसे जलाभाव हो। प्रारम्भिक अवस्था में पौधों की पत्तियां हल्की पीली रंग की दिखाई देती है, जो बाद में मुरझाकर नीचे गिरने लगती है। धीरे-धीरे पौधा सूखने लगता है। फलतः पौधों की मृत्यु हो जाती है।

रोकथाम

यह फफूंद मृदा जनित हैं इसलिय खेत में गर्मियों में गहरी जुताई करें। इस रोग की रोकथाम के लिये 2 ग्राम बाविस्टीन अथवा 0.4 ग्राम टेबुकोनाजोल, ट्राइफ्लोक्सीस्ट्रोबिन 75 % अथवा 3 ग्राम कार्बोक्सिन 37.5% थाइरम 37.5%अथवा 10 ग्राम *ट्राइकोडर्मा हार्जियनम* को एक किलोंग्राम बीज में मिलाकर बीजोपचार कर बुआई करें तथा 2.5 किग्रा ट्राइकोडर्मा विरीडी को 100 किलोग्राम अच्छी सडी हुई गोबर की खाद में मिलाकर एक हेक्टेयऱ भूमि में मिलावें।

2. छाछिया (पाउडरी मिल्ड्यू):

यह रोग "*इरीसाइफी पोलीगोनी*" नामक कवक से होता है। इस रोग के लक्षण सर्वप्रथम पत्तियों पर सफेद चूर्ण के रूप में नजर आते है। धीरे-धीरे यह रोग पौधों के तनों एवं बीजों पर फैल जाता है और पूरा पौधा सफेद चूर्ण से ढक जाता है। रोग ग्रसित पौधों पर या तो बीज नहीं बनते या बहुत कम और छोटे आकार के बनते हैं।

रोकथाम

इस रोग की रोकथाम के लिये फसल पर घुलनषील गंधक 2 ग्राम प्रति लीटर पानी के घोल का छिड़काव करें अथवा 25 किलोग्राम गंधक चूर्ण का प्रति हैक्टेयर

e-ISSN No. 2583-0937

भुरकाव करें। अथवा डाइनोकेप 1 मि.ली. प्रतिलीटर पानी के हिसाब से 15 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करें।

3. झुलसा (ब्लाइट):

यह रोग "*आल्टरनेरिया पुनेनसिस*" नामक कवक द्वारा होता है। रोग के लक्षण मुख्यतः पत्तियों पर दिखाई देते हैं, किन्तु पौधों के सभी भाग प्रभावित हो सकते है"। रोग के सर्वप्रथम लक्षण पौधों की पत्तियों पर भूरे रंग के धब्बों के रूप में दिखाई देते हैं। धीरे-धीरे ये धब्बे काले रंग में बदल जाते हैं। धब्बों के आस-पास के स्थान पर क्लोरोफिल धीरे-धीरे नष्ट होने लगता है और एक संकीर्ण पीलिया क्षेत्र बन जाता हैं। अधिक प्रकोप होने पर पत्तियां झुलसी हुई दिखाई देती हैं।

रोकथाम

इसके नियंत्रण हेतु 300 ग्राम क्लोरोथालोनिल 70 प्रतिषत डब्ल्यू पी अथवा 500 ग्राम कार्बेन्डाजिम 12 प्रतिषत $ मैनकोजब 63 प्रतिषत डब्ल्यू पी अथवा 600 ग्राम मेटिराम 55 प्रतिषत, पायरोक्लोरेस्ट्रोबिन 5 प्रतिषत डब्ल्यू जी का एक एकड के हिसाब से छिड़काव करें। आवष्यकतानुसार 10-15 दिन के अन्तराल पर दोहरावे।

4. तना पिटिका (स्टेम गॉल):

यह रोग प्रोटोमाइसीज मेक्रोस्पोरस नामक फफूंद से उत्पन्न होता है। इस रोग के मुख्य लक्षण पत्तियों तथा तनों पर पिटिका यानि फफोले के रूप में दिखाई देती है। शुरू में तना पीला होने लगता है तथा जमीन के निकट छोटी-छोटी पिटिकाये बन जाती है। नमी की उपस्थिति में इस बीमारी का प्रकोप अधिक होता है।

रोकथाम

बुआई के लिये स्वस्थ बीजों का प्रयोग करें। इस रोग की रोकथाम के लिये थाइरम 2.5 ग्राम अथवा कार्बेन्डाजिम 1.5 ग्राम प्रति किलो बीज से बीजोपचार कर बुआई करें। बीमारी के लक्षण दिखाई देते ही कार्बेन्डाजिम एक ग्राम या मैन्कोजेब दो ग्राम या प्रोपिकोनाजोल (टिल्ट-25 ईसी) या डिफेनोकोनाजोल (स्कोर-25 ईसी) कवकनाशी का प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर फसल पर छिड़काव करे। आवष्यकतानुसार 10-15 दिन के अन्तराल पर दोहरावे।